P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11*(Part-2) February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

उत्तर प्रदेश के सरयूपार मैदान के तराई में जनसंख्या वृद्धि का स्थानिक एवं कालिक विश्लेषण

प्रभात कुमार तिवारी
शोध छात्र,
भूगोल विभाग,
बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कुशीनगर, उ.प्र., भारत

कौस्तुभ नारायण मिश्र
असोसिएट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कुशीनगर, उ.प्र., भारत

सारांश

किसी भी क्षेत्र के समाकलित विकास में उस क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या का सबसे प्रमुख योगदान होता है; लेकिन जब जनसंख्या क्षेत्र विशेष हेतु भार बनने लगती है, तब विभिन्न प्रकार की समस्याओं का उदय होता है। आज विश्व की कुल आबादी 7 अरब से अधिक है जिसमें सर्वाधिक जनसंख्या चीन और उसके बाद भारत की है। उत्तरी अमेरिका दुनिया के 16 प्रतिशत भू–भाग पर अवस्थित है जबकि दुनिया की सिर्फ 6 प्रतिशत जनसंख्या यहाँ निवास करती है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि विश्व की 45 प्रतिशत आय इन्हीं के पास है। दूसरी तरफ एशिया दुनिया के 18 प्रतिशत भू–भाग पर फैला हुआ है, जबकि विश्व की 67 प्रतिशत जनसंख्या इसी भू–भाग पर निवास करती है लेकिन सिर्फ विश्व का 12 प्रतिशत आय ही इसके पास है। इन आंकड़ों से एक बात तो आसानी से समझी जा सकती है कि अत्यधिक जनसंख्या वाले देशों की आर्थिक, सामाजिक स्थिति हमेशा चिंताजनक ही रहती है। किसी भी देश में मनुष्यों की संख्या ही मानव संसाधन नहीं है। संसाधन के रूप में मनुष्य का आकलन उसकी कार्यक्षमता, दक्षता, कार्यरत व्यक्तियों की संख्या, उनकी साक्षरता का स्तर, उनके पोषण का स्तर, सामाजिक सुरक्षा का स्तर, प्रति व्यक्ति आय, जनसंख्या के विभिन्न आयुवर्ग के अंतर्गत आने वाली जनसंख्या आदि से किया जाता है। जनसंख्या की गुणवत्ता उसके स्वास्थ्य, निर्भरता अनुपात, साक्षरता एवं शिक्षा, प्रति व्यक्ति आय, जीवन प्रत्याशा तथा शिशु मृत्यु दर आदि से जानी जाती है। यदि गुणवत्ता का स्तर ऊँचा है तो स्वभावतः कार्यरत् व्यक्तियों की संख्या अधिक होगी, जिससे जीवन स्तर भी उच्च होगा। जनसंख्या में आश्रित व्यक्तियों (बच्चे, वृद्ध एवं अकर्मण्य) का आधिक्य उपभोक्ताओं की संख्या में वृद्धि कर देता है। अंततः उत्पादन घट जाता है। जनसंख्या भूगोल के अध्ययन व विश्लेषण में उसकी गत्यात्मकता का विवेचन विशेष महत्वपूर्ण है। जनसंख्या के गत्यात्मकता का मूल उसकी वृद्धि में निहित होता है, जिसका विश्लेषण समय एवं स्थान के परिप्रेक्ष्य में किया जाता है। जनसंख्या के कालिक परिवर्तन का प्रभाव लघु एवं दीर्घगामी दोनों प्रकार का होता है। चूँकि मानव संसाधनों का प्रणेता, उपभोक्ता एवं परिवेश निर्माता है, अतः जनसंख्या में वृद्धि ह्रास सम्पूर्ण प्रक्रिया को प्रभावित करती है। प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों की सहायता से इसका विवेचन किया जाना है।

मुख्य शब्द : जनसंख्या वृद्धि, कालिक, स्थानिक, संसाधन, मानव संसाधन, कार्यशील जनसंख्या, अकार्यशील जनसंख्या, संसाधन आधार, जन्मदर, मृत्युदर, जीवन प्रत्याशा।

प्रस्तावना

जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व का अध्ययन जनसंख्या भूगोल का महत्वपूर्ण पक्ष है। जनसंख्या वितरण एवं घनत्व में घनिष्ठ सम्बन्ध है। जनसंख्या वितरण से जहाँ जनसंख्या की स्थितिजन्य फैलाव का बोध होता है, वहीं जनसंख्या घनत्व से जनसंख्या के भूमि पर पड़ने वाले भार की जानकारी होती है। दूसरी तरफ जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व जनसंख्या के दूसरे पक्षों जैसे– लिंगानुपात, व्यावसायिक संरचना, आयु संरचना, जन्मदर–मृत्युदर के स्वरूप के नियन्त्रक हैं। जनसंख्या वितरण एवं घनत्व एक–दूसरे से सम्बन्धित हैं किन्तु भौगोलिक भाषा में इन दोनों में अन्तर विद्यमान हैं। भारत की जनसंख्या में ''संख्या–तत्व'' सर्वप्रधान होता जा रहा है, जबकि 'जन–तत्व'' अर्थात गुणवत्ता सम्पन्न मानव का ह्रास हो रहा हैं। मानवीय गुणवत्ता की दृष्टि से भारत की दशा अत्यन्त ही दयनीय हैं। यू0एन0डी0पी0 द्वारा प्रकाशित मानव विकास प्रतिवेदन–1993 के अनुसार 173 देशों के लिए निर्मित मानव विकास निर्देशांक में

भारत का 134 वां स्थान था, वहीं 2014 में 188 देशों की सूची में भारत का स्थान 135 वां तथा 2015–16 में 130 वां रहा। जबकि जुलाई 2001 में प्रस्तुत ''मेकिंग न्यू–टेक्नीक्स वर्क्स फॉर ह्यूमन डेवलेपमेन्ट'' शीर्षक वाली मानव विकास रिपोर्ट में कुल 162 देशों का सर्वेक्षण किया गया, जिसमें भारत का 115 वां स्थान रहा।

इस रिपोर्ट में वास्तविक क्रय क्षमता, शिक्षा तथा स्वास्थ्य के स्तरों का समावेश किया गया है। वास्तव में क्रय क्षमता, लोगों की आय, जो रोजगार के अवसर पर निर्भर है, का मापदण्ड है, तो शिक्षा मानसिक विकास के स्तर पर, और स्वास्थ्य शारीरिक विकास के मापदण्ड पर निर्भर करता है। इन मानदण्डो का समुच्चयिक मान अधिकतम हो सकता है, जबकि न्यूनतम मान भी हो सकता है। भारत का न्यून निर्देशांक इतना चिन्तनीय नहीं है, जितना भारत के अन्तर्गत मानव विकास की दशा व स्तर में क्षेत्रीय विभिन्नता। यदि उत्तर प्रदेश की बात करें तो स्पष्ट होगा कि उत्तर प्रदेश का मानव विकास स्तर राष्ट्रीय मानव विकास स्तर का मात्र एक तिहाई है अर्थात यह सूचकांक मात्र 0.1 है। यदि इस सूचकांक को जीवन–शैली की स्वतंत्रता एवं अवसरों का विस्तार मानें तो उत्तर प्रदेश में निश्चय ही ऐसे अवसर व उत्तम जीवन शैली की सुलभता नहीं है। उत्तर प्रदेश का एक बड़ा जनसमुदाय ग्रामीण है, जो अभाव का जीवन जीने हेतु विवश है। इस दरिद्रता दुष्चक्र में विकास की दौड़ में पीछे छूटे लोग गरीबी, शारीरिक दुर्बलता, शक्तिहीनता आदि के जाल में उलझे हुए हैं। इन सारी परिस्थितियों का एकमात्र जननी अनियंत्रित रूप से निरन्तर बढ़ती जा रही है। भारत के ठण्डे राज्यों में जनसंख्या की समस्या एक विनाशकारी समस्या के रूप में उभर रही है। किसी भी क्षेत्र के जनसंख्या अध्ययन में भूमि और जनसंख्या दो महत्वपूर्ण घटक है जो आपस में वितरण एवं घनत्व के रूप में प्रकट होते हैं। जनसंख्या का वितरण धरातल पर दो रूपों में प्रकट होता है।

(क) बसे हुये क्षेत्र (ख) बिना बसे हुये क्षेत्र।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य शोध में जनसंख्या वृद्धि प्रतिरूप एवं उसकी गत्यात्मकता का आकलन करना। जनसंख्या वितरण प्रतिरूप का स्थानिक व कालिक विश्लेषण करना। जनसंख्या के स्थानान्तरण का स्थानिक कालिक विवेचना करना। जनसंख्या गत्यात्मकता के कारकों का क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव एवं उसके प्रभाव का अध्ययन करना। यह अध्ययन चयनित क्षेत्र में इसलिये आवश्यक है; क्योंकि संसाधन आधार और जनसंख्या के बीच आनुपातिक सम्बन्ध सदैव सकारात्मक होना चाहिये। जबकि अनुभव में यह आ रहा है कि प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में यह अनुपात नकारात्मक दिशा में है। उपलब्ध संसाधन और संसाधन उपभोग का साहचर्य को स्पष्ट करने हेतु प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि का स्थानिक एवं कालिक विश्लेषण किया गया है।

विधितन्त्र एवं उपागम

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या भूगोल के अध्ययन में प्रयुक्त होने वाली सभी सामान्य विधियों एवं तकनीकों का प्रयोग किया जायेगा। प्राथमिक ऑकड़ों को प्रतिचयन अध्ययन द्वारा संकलित किया जायेगा, जिसमें साक्षात्कार विधि द्वारा सामाजिक आर्थिक व्यवस्था की जानकारी प्राप्त की जायेगी। द्वितीयक ऑकड़ों के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की पत्र–पत्रिकाएं, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबन्धों का अध्ययन किया जायेगा। भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित विभागों के द्वारा प्रकाशित जनगणना पुस्तिका, जनपद गजेटियर, जनपद सांख्यिकी पत्रिका द्वारा ऑकड़ों का संकलन एवं मानचित्र उपागम का भी प्रयोग किया जायेगा। जनसंख्या की गतिशीलता के विविध पक्षों पर प्रकाश डालने हेतु विभिन्न वर्षो के जनसांख्यिकी ऑकड़ों का प्रयोग किया जायेगा। प्रस्तुत अध्ययन में क्षेत्र की सम्पूर्ण जनसंख्या की विशेषताओं को कालिक परिवर्तनों एवं क्षेत्रीय स्वरूपों में स्पष्ट करने के लिए क्रमबद्ध उपागम को अपनाया जायेगा। सम्पूर्ण क्षेत्र की जनसंख्या विशिष्टताओं को विभिन्न शीर्षकों के आधार पर क्षेत्रीय रूप में अध्ययन की विधि अपनायी जायेगी। और जनपद स्तर पर जनसंख्या की विशेषताओं का अध्ययन किया जायेगा। जिला स्तर पर भूमि उपयोग कृषि विकास स्तर, सिचाई, परिवहन एवं संचार सम्बन्धी सूचनाओं हेतु जिला अर्थ एवं संख्या अनुभाग द्वारा प्रकाशित 'सांख्यिकीय पत्रिका' का सहारा लिया जायेगा एवं व्यक्तिगत सर्वेक्षण के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया जायेगा। प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ो का संकलन एवं मानचित्र उपागम का भी प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाएँ

1. जनसंख्या की गत्यात्मकता में स्थानिक एवं कालिक विषमता पायी जाती है ।
2. जनसंख्या गत्यात्मकता अनेक सामाजिक–आर्थिक कारकों से प्रभावित होती है तथा जनसंख्या गत्यात्मकता सामाजिक–आर्थिक जीवन को भी प्रभावित करती हैं।
3. जनसंख्या गत्यात्मकता से जनसंख्या की संरचना प्रभावित होती है और जनसंख्या वृद्धि इसका प्रमुख कारक होती है।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन के लिए सरयूपार मैदान तराई क्षेत्र का चयन किया गया हैं। भावर प्रदेश से सटे ही दक्षिण में तराई क्षेत्र का विस्तार है। यह तराई क्षेत्र उत्तरी मध्य भारत के सुदूर उत्तरी भाग से लेकर नेपाल के दक्षिणी भाग में पूर्व से पश्चिम तक एक पतली पट्टी के रूप में विस्तृत है। तराई का नामकरण हिमालय के दक्षिणस्थ पाद प्रदेश के समीपवर्ती क्षेत्रों में गोलाश्म, बजरी आदि अवसादों का ऐसा निक्षेप है, जहॉ नदियों का जल स्वतः ही लुप्त हो जाता है। इसका प्रमुख कारण निक्षेपित करणों का रन्ध्रयुक्त होना है। इस क्षेत्र को भावर प्रदेश की संज्ञा दी जाती है। प्रकृत ने यहाँ इस प्रकार भूसतह का निर्माण किया है, जहाँ सतही जल बड़ी सरलता से भूमिगत हो जाता है। इसी भावर प्रदेश से सटे दक्षिण भाग में तराई क्षेत्र का विस्तार है। इस तराई क्षेत्र को विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न नामों से भी पुकारा जाता है–यथा–नेपाल में इसे 'तरायनी' के नाम से जबकि अनेक स्थानों पर इसे मोरंग

नाम से सम्बोधित किया जाता है। भारत नेपाल का यह तराई क्षेत्र एक विशिष्ट भौगोलिक एवं सांस्कृतिक प्रदेश है। सरयूपार तराई क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति $26^0$55'' उत्तर से $28^0$19'' उत्तरी अक्षांश एवं $81^0$4'' से $84^0$2'' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह मैदान एक पतली पेटी के रूप में उत्तर–पश्चिम से दक्षिण पूर्व विस्तृत है, जिसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल 8984 वर्ग किलोमीटर है। जिसमें बहराइच जनपद का क्षेत्रफल 822 वर्ग किमी0, श्रावस्ती जनपद का क्षेत्रफल 1064 वर्ग किमी0, बलरामपुर जनपद का क्षेत्रफल 2187 वर्ग किमी0, सिद्धार्थनगर जनपद का क्षेत्रफल 2172 वर्ग किमी0, महराजगंज जनपद का क्षेत्रफल 1982 वर्ग किमी0 तथा कुशीनगर जनपद का क्षेत्रफल 757 वर्ग किमी0 है। समतल भूमि, अपेक्षाकृत मन्द, वर्षा की अधिकता, आदि इस क्षेत्र की प्रमुख विशेषताएं हैं। वर्षा की अधिकता के कारण यह क्षेत्र सर्वदा वनाच्छादित रहा है। नम जलवायु के कारण यहाँ पर मच्छरों, मक्खियों तथा अन्य भयंकर जीवन जन्तुओं की प्रमुखता रही है। वर्तमान में इस क्षेत्र में जनघनत्व तेजी से बढ़ रहा हैं; क्योंकि रिक्त भू–भाग देश के विभिन्न क्षेत्रों से लोगों को यहाँ आने के लिए आकर्षित कर रहा है; वास्तव में तराई का शाब्दिक अर्थ आर्द्र होता है।

साहित्यावलोकन

जनसंख्या का अध्ययन प्राचीन काल से ही विभिन्न विद्वानों, विशेषज्ञों एंव विचारकों द्वारा प्रस्तुत किया जाता रहा है। जनसंख्या भूगोल को एक कमबद्ध विषय के रूप में मान्यता दिलाने तथा अन्य विषयों के समकक्ष प्रतिस्थापित करने का कार्य अमेरिकी भूगोलवेत्ता ट्रिवार्था ने किया। 1953 ई0 में 'ASSOCIATION OF AMERICAN GEORARPHY" के समक्ष अध्यक्षीय भाषण के दौरान ट्रिवार्था ने जनसंख्या भूगोल के लिए ठोस तार्किक एवं आधारभूत सिद्धान्त प्रस्तुत किये। इन्होंने जनसंख्या भूगोल को परिभाषित करते हुए बताया कि ''जनसंख्या भूगोल का ध्येय बसे हुए पृथ्वी तल पर जो विविधता और विभिन्नता पायी जाती है, प्रादेशिक स्तर पर उसी का ज्ञान प्राप्त करना होता है। ट्रिवार्था के विचारों को डेम्को महोदय ने विशेष बल देते हुए जनसंख्या की विशिष्टता पर जोर दिया, जो भौगोलिक विभिन्नता जनित है। पी0ई0 जेम्स की पुस्तक में ट्रिवार्था के भाषण का छपना जनसंख्या भूगोल के विकास में क्रान्तिकारी चरण था। क्लार्क की पुस्तक में जनसंख्या भूगोल को परिभाषित करते हुए बताया गया है कि जनसंख्या भूगोल में जनसंख्या के वितरण, संघतन, प्रवास और वृद्धि में पायी जाने वाली स्थानिक विभिन्नताओं का अध्ययन किया जाता है। साथ ही ये स्थानिक विभिन्नताएं क्षेत्र विशेष की प्रकृति में पायी जानेवाली स्थानिक विभिन्नताओं से किस प्रकार सम्बन्धित होती है, का भी अध्ययन किया जाता है। जेलिन्स्की के अनुसार जनसंख्या भूगोल एक ऐसा विज्ञान है जो किसी क्षेत्र की जनसंख्या के विविध पहलुओं का अध्ययन उस क्षेत्र की प्राकृतिक परिस्थितियों के संदर्भ में करता है। गारनियर ने फ्रांसीसी भाषा में लिखी गयी अपनी पुस्तक जिसका अनुवाद बीबर ने Geogarphy of Population के नाम से किया है, में लिखा है कि जनसंख्या भूगोल वर्तमान वातावरण के संदर्भ में जनांकिकी तथ्यों का वर्णन है।

जनसंख्या से सम्बन्धित माल्थस का प्रथम निबन्ध प्रकाशित हुआ, जिसमें जनसंख्या वृद्धि एवं जीवन के निर्वाहक साधनों में होने वाली असमानता के कारण जनसंख्या की सापेक्षिक वृद्धि को नियंत्रित करने के नैतिक संयम पर बल दिया है। इसी प्रकार के विचार चीन के हुंग–लिपांग–ची द्वारा भी प्रस्तुत किया गया। इन्होंने मार्क्स के सिद्धान्त की कटु आलोचना की। कालान्तर में 19वीं शदी में जनसंख्या सम्बन्धी अध्ययनों का द्वितीय चरण प्रारम्भ हुआ, जिसमें अमेरिका में जनांकिकीय तत्वों का पंजीकरण प्रारम्भ हुआ। जनांकिकी पर कार्य करने के लिए ब्रिटेन, जर्मनी तथा फ्रांस में प्रतिस्पर्धा दिखी। 1885 ई0 में सर्वप्रथम गिलाई महोदय ने 'डेमोग्राफी' शब्द का प्रयोग किया, लेकिन इसे आधुनिक स्वरूप देने का कार्य ब्रिटेन के विद्वानों ने किया। 1922 ई0 में कारसण्डर्स की ''जनसंख्या समस्या विकास का एक अध्ययन'' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। जिसके द्वारा जनांकिकीय को जीवन विज्ञान की अपेक्षा सामाजिक विज्ञान की ओर ले जाने का कार्य किया गया। आधुनिक काल में ट्रिवार्था के साथ ही साथ बर्कले ने 1958 में जनसंख्या के विविध विधियों पर प्रकाश डाला। इनके अतिरिक्त थामसन, चन्द्रशेखर, डेविस, शेखर मुखर्जी, एफ0जे0मांक हाउस, स्मिथ, एकरमैन, मैलेजीव, हेनरी, डी0आई0 बैलेन्टी आदि ने जनसंख्या भूगोल को प्रतिस्थापित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

विगत कुछ वर्षो में जनसंख्या का अध्ययन पर्यावरण एवं संविकास के संदर्भ में किया जाने लगा है। इस संदर्भ में एम0के0 तोल्वा, जी0बर्नाड एस0एन0 अग्रवाल, प्रो0 जगदीश सिंह विद्वानों का प्रयास महत्वपूर्ण है। मानव, पृथ्वी तथा पर्यावरण सम्बन्धी अध्ययनों को सीमाबद्ध कर पाना बेहद कठिन कार्य है। साहित्यों की समीक्षा से विदित होता है, कि तमाम लेखों में जहाँ संसाधनों के विस्तृत आयाम को प्रस्तुत किया गया है, वहीं कुछ विद्वानों ने समस्यामूलक एवं नीतिपरक व नियोजन से सम्बन्धित अध्ययन भी प्रस्तुत किया है। यदि मैनर के 'पर्यावरण का स्वरूप', रोब के 'वातावरण एवं मानव', साउथविक के 'परिस्थैतिकी और हमारे पर्यावरण की गुणवत्ता' है, आरविल के 'मानव और पर्यावरण' में पर्यावरण के विभिन्न घटकों का विश्लेषण करने के उपरान्त पर्यावरणीय अवक्रमण का अध्ययन किया गया है। मैसन का 'पर्यावरणीय समस्याएं, सिद्धान्त व समालोचना', डारमैन का 'पर्यावरणीय नियोजन, प्रत्यक्षीकरण और संरक्षण', पार्क की 'पर्यावरणीय नीतियां : अंतर्राष्ट्रीय समीक्षा', खुशरो का 'भारत में पर्यावरणीय प्राथमिकताएं और संधृत विकास', डॉ0 जगदीश सिंह की 'पापुलेशन, इन्वायर्नमेण्ट एण्ड इको डेवलपमेण्ट इन इस्टर्न यू0पी0,' पावलॉव की 'इण्डियाः सोशल एण्ड इकोनोमिक डेवलेपमेण्ट' (18वीं से 20वीं शदी), बैमेट की 'कल्चरल आस्पेक्ट्स एण्ड डेवलपमेण्ट,' डॉ0 जगदीश सिंह की 'इन्वार्नमेण्ट इन ज्योग्राफीः रिस्ट्रोस्पेक्ट्स एण्ड प्रोस्पेक्ट्स,' माइकल सेल की 'ज्योग्राफी इज ए स्टडी ऑफ इन्वार्नमेण्ट', सैश की 'द स्ट्रेटजी ऑफ इको–डेवलेपमेण्ट',

में पर्यावरण की नीतियों के साथ ही साथ उत्पन्न समस्याओं व उनके निराकरण की चर्चा की गयी। 1976 में प्रकाशित पीटर की पुस्तक 'डेमोग्राफी' में जनसंख्या दबाव तथा भूमि उपयोग का वर्णन देखने को मिलता है। ओ0एस0 श्रीवास्तव की 'ए टेस्ट बुक ऑफ डेमोग्राफी', थाम्पसन और डेबिस की 'जनसंख्या समस्या', आर0एम0 दूबे की 'उत्तर प्रदेा के विशेष संदर्भ में भारत की जनसंख्या गत्यात्मकता' जेलिंस्की की 'प्रोलॉग ऑफ पापुलेशन ज्योग्राफी', जी0एस0 गोसल तथा ए0बी0 मुकर्जी की 'द चमार्स ऑफ उत्तर प्रदेश' उल्लेखनीय है।

डॉ0 ओम प्रकाश शुक्ल द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध 'लैण्ड यूज इन इकोडेवलेपमेण्ट पर्सपेक्टिव, ए केस स्टडी ऑफ देवरिया डिस्ट्रिक', डॉ0 हरिशंकर लाल की शोध प्रबन्ध 'भारत नेपाल तराई के पारिस्थैतिकी तन्त्र पर निर्वनीकरण का प्रभाव' भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रयास है। भारत में जनसंख्या भूगोल का अध्ययन गुरूदेव सिंह घोसाल के कार्य से प्रारम्भ होता है। जिससे प्रभावित होकर अनेक विद्वानों ने देश के विभिन्न क्षेत्रों की जनसंख्या का अध्ययन किया। के0एस0 अहमद ने सम्पूर्ण भारत के क्षेत्रों में जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले भौतिक एवं सांस्कृतिक कारकों का विश्लेषण किया। गोरखपुर विश्वविद्यालय में भी जनसंख्या तथा साक्षरता के अंतर्सम्बन्धों पर उल्लेखनीय कार्य हुए हैं, जिसमें दिनेश राय, मधु यादव, गीता श्रीवास्तव, कुसुम सिंह का योगदान प्रमुख है। डी0पी0 मिश्र ने देवरिया जनपद के संदर्भ में अपना शोध प्रबन्ध 'साक्षरता का स्तर एवं जीवन की गुणवत्ता' में इनके मध्य अंतर्सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया है।

जनसंख्या विषय पर शशि सिंह द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ''जनसंख्या संसाधन गत्यात्मकता : बलिया जनपद का एक प्रतीक अध्ययन,'' 2001 में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि जनसंख्या घनत्व में समय व क्षेत्र परिप्रेक्ष्य में परिवर्तनशीलता एवं कार्यरत जनसंख्या के रूप में हुए परिवर्तन का अध्ययन किया है। जनसंख्या गत्यात्मकता पर अशोक कुमार श्रीवास्तव 2006 की शोध प्रबन्ध 'उत्तर प्रदेश तराई क्षेत्र में जनसंख्या गत्यात्मकता एवं विकास' में शोधकर्ता ने विभिन्न अध्ययनों और आंकड़ों के आधार पर बताया है कि जनसंख्या का कालिक परिवर्तन जनसंख्या वृद्धि में निहित है जो प्राकृतिक वृद्धि और आब्रजन–प्रवजन का प्रतिफल है। इसी संदर्भ में सतीश कुमार यादव 2010 के प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ''वाराणसी जनपद में जनसंख्या गत्यात्मकता का भौगोलिक अध्ययन'' में जनसंख्या के विविध पक्षों के सम्यक अध्ययन को स्पष्ट किया गया है। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर में जनसंख्या भूगोल पर अनेक शोधकार्य हुए है। जिसमें आनन्द कुमार सोनकर 2011 के प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ''आजमगढ़ जनपद में जनसंख्या वृद्धि एवं पर्यावरण अवक्रमणः एक भौगोलिक अध्ययन'' में जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ प्राकृतिक संसाधनों की उपयोगिता एवं पारिस्थैतिकी संतुलन पर प्रकाश डाला गया है। प्राकृतिक संसाधनों की उपयोगिता तभी सुनिश्चित होती है जब मनुष्य उसके सम्पर्क में आता है, किसी भी वस्तु या साधन की उपयोगिता वृद्धि में उसका समुचित प्रयोग महत्वपूर्ण होता है। इस प्रकार विकास के लिए मानव एवं प्राकृतिक पर्यावरण में संतुलन होना अतिआवश्यक है। इनके अतिरिक्त मदन मोहन श्रीवास्तव 2012 के ''तहसील बूढ़नपुर का समन्वित ग्रामीण विकास अध्ययन'' एवं चन्द्रजीत यादव 2014 के ''इलाहाबाद जनपद में जनसंख्या का स्थानिक प्रतिरूप'' में जनसंख्या की सामाजिक आर्थिक स्थिति, जनसंख्या घनत्व, शैक्षिक स्तर, स्वास्थ्य, आवास परिवहन, आदि क्षेत्रों पर अध्ययन किया गया है।

मुख्य अध्ययन

प्रस्तुत क्षेत्र नेपाल की सीमा से सटा हुआ है । इस क्षेत्र में नेपाल से व्यापक पैमाने पर वैध एवं अवैध प्रव्रजन होता है; जिससे जनसंख्या संतुलन प्रभावित होता है और समेकित रूप में जनसंख्या की संरचना पर प्रभाव पड़ता है। वर्तमान समय में आतंकवाद एवं साम्प्रदायिकता की देशव्यापी समस्या पर भी इस प्रकार के आव्रजन का प्रभाव पड़ता है। नेपाल को उपर से नीचे क्रमशः जनसंख्या संरचना के अनुसार गोरखाली क्षेत्र, नेपाली क्षेत्र एवं मद्धेशी क्षेत्र में स्पष्ट रूप से विभाजित किया जा सकता है । मध्य नेपाल, जिसमें अधिकांश नेपाली लोग रहते हैं, में भारतीय मूल के व्यवसायिक लोग भी अधिक सक्रिय हैं इन सभी प्रकार के तत्वों के कारण एवं नेपाल सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सामरिक अस्थिरता के कारण प्रव्रजन का भारत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उक्त के आलोक में इस क्षेत्र की जनसंख्या गत्यात्मकता का अध्ययन अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। इसी कारण यह अध्ययन प्रासंगिक है और इसी उद्देश्य से इस विषय को चयनित भी किया गया है ।

अध्ययन क्षेत्र सरयूपार मैदान उत्तर प्रदेश का तराई क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि से अछूता नहीं है विषम जलवायु होने के बाद भी इस क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि देखने को मिलता है। अध्ययन क्षेत्र छः जनपदों के 32 विकास खण्डों से मिलकर बना है। अध्ययन के छः जनपद क्रमशः बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, सिद्धार्थ नगर, महाराजगंज तथा कुशीनगर हैं।

सारणी संख्या–1

सरयूपार मैदान (उत्तर प्रदेश) के तराई क्षेत्र में सम्मिलित जनपदों का कुल क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर में)

वर्ष – 2011

क्रमांक	जनपद	कुल क्षेत्रफल	ग्रामीण क्षेत्रफल	नगरीय क्षेत्रफल	जनपदीय प्रतिशतता
1.	बहराइच	5020.00	4990.05	29.95	24.45
2.	श्रावस्ती	1858.00	1855.51	2.49	09.80
3.	बलरामपुर	3349.00	3328.62	20.38	17.64

4.	सिद्धार्थनगर	2895.00	2844.47	50.53	15.25
5.	महाराजगंज	2952.00	2902.91	49.09	15.55
6.	कुशीनगर	2906.00	2859.96	46.04	15.31
		18980.00	**18781.51**	**198.48**	**100.00**

सारणी संख्या 1 से स्पष्ट है कि तराई क्षेत्र में सम्मिलित छः जनपदों का कुल क्षेत्रफल 18980.00 वर्ग किमी0 है। जबकि ग्रामीण क्षेत्र का क्षेत्रफल 18781.51 तथा नगरीय का क्षेत्रफल 198.48 है। सारणी संख्या 1 से यह स्पष्ट होता है कि तराई क्षेत्र में सम्मिलित छः जनपदों में क्षेत्रफल की दृष्टि से बहराइच (5020 वर्ग किमी0) जनपद शीर्ष पर है इसके पश्चात् क्रमशः बलरामपुर (3349 वर्ग किमी0) महाराजगंज (2952 वर्ग किमी0), कुशीनगर (1906 वर्ग किमी0), सिद्धार्थनगर (2895 वर्ग किमी0) तथा श्रावस्ती (1858 वर्ग किमी0) जनपद आते हैं। सारणी संख्या 1 से स्पष्ट है कि बहराइच जनपद के कुल क्षेत्रफल का 4990.05 वर्ग किमी0 ग्रामीण तथा 29.95 वर्ग किमी0 क्षेत्र नगरीय है। श्रावस्ती जनपद का 1855.51 वर्ग किमी0 क्षेत्र ग्रामीण तथा 2.49 वर्ग किमी0 क्षेत्र नगरीय है। बलरामपुर जनपद का 3328.62 वर्ग किमी0 ग्रामीण तथा 20.38 वर्ग किमी0 नगरीय क्षेत्र है। सिद्धार्थनगर का 2844.77 वर्ग किमी0 ग्रामीण तथा 50.53 वर्ग किमी0 नगरीय क्षेत्र है। महाराजगंज जनपद का 2902.91 वर्ग किमी0 ग्रामीण एवं 49.09 वर्ग किमी0 नगरीय है जबकि कुशीनगर का 2859.96 वर्ग किमी0 ग्रामीण एवं 46.04 वर्ग किमी0 नगरीय क्षेत्र है। सम्पूर्ण जनपदों में बहराइच जनपद ग्रामीण क्षेत्रफल तथा सिद्धार्थनगर नगरीय क्षेत्रफल, की दृष्टि से शीर्ष पर हैं जबकि श्रावस्ती जनपद सबसे निचले क्रम पर है।

सारणी संख्या 2

सरयूपार मैदान (उत्तर प्रदेश) के तराई क्षेत्र सम्मिलित जनपदों की कुल जनसंख्या

वर्ष 2011

क्रमांक	**जनपद**	**कुल जनसंख्या**	**स्त्री**	**पुरूष**
1.	बहराइच	3490196	1644915	1845281
2.	श्रावस्ती	1117361	523464	593897
3.	बलरामपुर	2148795	1033956	1114839
4.	सिद्धार्थ नगर	2557742	1263441	1294301
5.	महाराजगंज	2684703	1302949	1381754
6.	कुशीनगर	3564544	1746489	1818055
	योग	**15563341**	**7515214**	**8048127**

अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित समस्त जनपदों का कुल क्षेत्रफल 9775.59 है। जबकि स्त्रियों की कुल जनसंख्या 15563341 तथा पुरूषों की कुल जनसंख्या 8048127 है। सारणी संख्या 2 से स्पष्ट है तराई क्षेत्र में सम्मिलित कुशीनगर की जनसंख्या वर्ष 2011 में 3564544 थी जिसमें स्त्रियों की संख्या 1746489 जबकि पुरूषों की संख्या 1818055 थी जो सम्मिलित जनपदों में सर्वाधिक जनसंख्या वाला जनपद है जबकि सबसे कम जनसंख्या वाला सम्मिलित जनपद श्रावस्ती है जिसकी वर्ष 2011 में सम्पूर्ण जनसंख्या 1117361 थी जिसमें स्त्रियों की जनसंख्या 523464 जबकि पुरूषों की संख्या 593897 थी।

सारणी संख्या 3

सरयूपार मैदान (उत्तर प्रदेश) के तराई क्षेत्र में विकासखण्डवार कुल जनसंख्या एवं जनसंख्या की दशकीय वृद्धि

क्र. सं.	**जनपद**	**विकास खण्ड**	**(2001–2011) दशकीय वृद्धि (प्रतिशत में)**	**कुल जनसंख्या (वर्ष 2011)**		
				स्त्री	**पुरूष**	**योग**
1.	बहराइच	मिहिपुरवा	33.38	178793	197983	376776
2.		नवाबगंज	20.42	85129	94970	180099
3.	श्रावस्ती	जमुनहा	33.13	112958	125899	238857
4.		हरिहरपुररानी	32.14	92004	106476	198480
5.		सिरसिया	30.50	102320	118028	220348
6.	बलरामपुर	हरैया सतघरवां	34.00	124540	143925	268465
7.		तुलसीपुर	27.80	125966	139469	265435
8.		गैसड़ी	28.15	118125	129740	247865
9.		पचफेड़वा	30.55	105213	113340	218553
10.		बलरामपुर	25.00	147026	164363	311389
11.	सिद्धार्थनगर	इटवा	17.06	92467	91122	183589
12.		भनवापुर	25.99	103781	107509	211290
13.		खुनियांव	20.05	108497	105967	214464

14.		बढ़नी	30.49	70540	74729	145269
15.		बर्डपुर	28.55	81157	83735	164892
16.		नौगढ़	27.99	82979	87276	170255
17.		जोगिया	24.31	65571	67374	132945
18.		उसका बाजार	26.01	51994	55582	107576
19.		बांसी	22.89	75791	76561	152352
20.		शोहरतगढ़	29.12	65794	67316	133110
21.		नौतनवा	26.16	118917	126652	245569
22.		लक्ष्मीपुर	30.13	108617	116820	225437
23.		वृजमनगंज	27.04	102218	109736	211954
24.	महाराजगंज	फरेन्दा	20.53	88000	94805	182805
25.		निचलौल	23.86	124474	131283	255757
26.		मिठौरा	20.70	120618	125439	246057
27.		महाराजगंज	23.82	106749	113014	219763
28.		घुघली	18.60	93447	95505	188952
29.		सिसवां	20.12	110890	117257	228147
30.		खड्डा	30.03	118576	127869	246445
31.	कुशीनगर	नेबुआ नौरंगिया	27.46	108659	115100	223759
32.		बिशुनपुरा	23.81	123452	129308	252760
योग				**3315262.00**	**3554152.00**	**6869414.00**

प्रस्तुत सारणी से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि का स्वरूप बहुत ही असमान है। कुछ विकासखण्डों में जनसंख्या वृद्धि अधिक तो कुछ में कम है। जनसंख्या वृद्धि क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप को स्पष्ट करने के लिए अध्ययन क्षेत्र को 4 क्षेत्र में विभाजित किया गया है।

1. अति उच्च जनसंख्या वृद्धि के क्षेत्र (30 प्रतिशत से अधिक)
2. उच्च जनसंख्या वृद्धि के क्षेत्र (25–30 प्रतिशत)
3. मध्यम जनसंख्या वृद्धि के क्षेत्र (20–25 प्रतिशत)
4. निम्न जनसंख्या वृद्धि के क्षेत्र (20 प्रतिशत से कम)

अति उच्च जनसंख्या वृद्धि के क्षेत्र (30 प्रतिशत से अधिक)

इस क्षेत्र के अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र के 9 विकास खण्ड आते हैं जो क्रमशः मिहिपुरवा (33.38 प्रतिशत), जमुनहा (33.13 प्रतिशत), हरिहरपुररानी (32.14 प्रतिशत) सिरसिया (30.50 प्रतिशत), हरैया सतघरवां (34 प्रतिशत), पचफेड़वा (30.55 प्रतिशत), बढ़नी (30.49 प्रतिशत), लक्ष्मीपुर (30.13 प्रतिशत), तथा खड्डा (30.03 प्रतिशत) हैं।

उच्च जनसंख्या वृद्धि वाले क्षेत्र (25–30 प्रतिशत)

इसके अंतर्गत उन विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है जहाँ वृद्धि दर 25 से 30 प्रतिशत के मध्य है। अध्ययन क्षेत्र के 11 विकासखण्ड तुलसीपुर (27.80 प्रतिशत) गैसड़ी (28.15 प्रतिशत), बलरामपुर (25 प्रतिशत), भनवापुर (25.99 प्रतिशत), बर्डपुर (28.55 प्रतिशत), नौगढ़ (27.99 प्रतिशत), उसका (26.01 प्रतिशत), शोहरतगढ़ (29. 12 प्रतिशत),नौतनवा (26.16 प्रतिशत) वृजमनगंज (27.04 प्रतिशत) तथा नेबुआ नौरंगिया (27.46 प्रतिशत) इसके अंतर्गत आते हैं। इसमें बहराइच तथा श्रावस्ती जनपद का कोई भी विकासखण्ड शामिल नहीं है।

मध्यम जनसंख्या वृद्धि के क्षेत्र (20–25 प्रतिशत)

मध्यम जनसंख्या वृद्धि वाले क्षेत्र में अध्ययन क्षेत्र के 10 विकासखण्ड आते हैं जो क्रमशः नवाबगंज (20.42 प्रतिशत), खुनियांव (20.05 प्रतिशत), जोगिया (24.31 प्रतिशत) बांसी (22.89 प्रतिशत), फरेन्दा (20.53 प्रतिशत) निचलौल (23.86 प्रतिशत), मिठौरा (20.70 प्रतिशत), महाराजगंज (23.82 प्रतिशत), सिसवां (20.12 प्रतिशत) तथा विशुनपुरा (23.81 प्रतिशत) हैं। इनमें सर्वाधिक विकासखण्ड महराजगंज जनपद के हैं जबकि श्रावस्ती, बलरामपुर जनपद का कोई भी विकासखण्ड इसके अंतर्गत नहीं आता है।

निम्न जनसंख्या वृद्धि के क्षेत्र (20 प्रतिशत से कम)

इसके अंतर्गत ऐसे विकासखण्डों को शामिल किया गया है जिनकी जनसंख्या वृद्धि 20 प्रतिशत से कम है इसमें अध्ययन क्षेत्र के इटवा (17.06 प्रतिशत) तथा घुघली (18.60 प्रतिशत) विकासखण्ड आते हैं। इस क्षेत्र के अंतर्गत बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर तथा कुशीनगर जनपद का कोई भी विकासखण्ड नहीं आता जबकि सिद्धार्थनगर तथा महाराजगंज जनपद के एक–एक विकासखण्ड सम्मिलित हैं।

तराई क्षेत्र का प्रारम्भिक इतिहास इस क्षेत्र के एक विशिष्ट भौगोलिक व्यक्तित्व को उजाकर करता है। प्रारम्भिक इतिहास से यह ज्ञात होता है कि यह क्षेत्र भारतीय सांस्कृतिक क्षेत्र का एक अभिन्न अंग रहा है। यह क्षेत्र हिमालय पर्वतीय भाग एवं गंगा मैदान के मध्य एक

संक्रमण क्षेत्र के साथ–साथ इन दो भौगोलिक प्रदेशों के मध्य एक सूत्र का कार्य करता है। पहाड़ों की मनोहारी दृष्यावलियाँ, शान्त–वातावरण कल–कल निनाद करती नदियाँ, झरने, पशु–पक्षी आदि मानव को स्वयं ही आकर्षित करते थे, और इन तक पहुँचने के लिए मानव को इस तराई क्षेत्र से ही गुजरना होता था। किन्तु धीरे–धीरे मानव का बसाव दक्षिणी क्षेत्र से इस क्षेत्र में बढ़ने लगा |

निष्कर्ष

विश्व स्तर पर जनसंख्या की बढ़ती समस्याओं के निवारण तथा पारिस्थैतिकी तन्त्र पर हो रहे अतिक्रमण को रोकने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने भी वृहद स्तर पर योगदान करना प्रारम्भ किया है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से ही संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व बैंक तथा उनके विविध अनुशंगिक संगठनों के साथ ही साथ ई0ई0सी0, कामेकॉन, एशियान, सार्क, फोर्ड फाउण्डेशन, एशिया डेवलेपमेण्ट बैंक आदि ने स्वयं तथा गैर सरकारी संस्थाओं को वित्तीय सहायता प्रदान कर उस क्षेत्र में क्रियाशील होने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार यह देखा गया है कि भारत तथा विश्वस्तर पर जनसंख्या के संदर्भ में अनेक सराहनीय प्रयास हुए हैं। प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जनसंख्या वृद्धि को रोकने के कारगर एवं दूरगामी उपाय करना बहुत आवश्यक है। भारत में सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर यह प्रयास तीव्र गति से एवं योजनाबद्ध तरीके से करना प्रस्तुत अध्ययन की दृष्टि से अपरिहार्य होता जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

Varma, R.C. (1990), "Indian Tribes Through Ages" Department of Publication Delhi.

त्रिपाठी, एम0 (1983), ´´कुमायुँ की तराई का प्रकृति पुत्र–थारू वन्य जाति´´ पृष्ठ–7–11

Singh, L.R. (1965), "The Tarai Region of Uttar Pradesh A Study in Human Geography"

सिंह, वी0 (2003) ´´थारू जनजाति निवास्य, अर्थव्यवस्था एवं समाज भारत (उ0प्र0)–नेपाल तराई प्रदेश का प्रतीक अध्ययन´´

Agrawal, A, (1995) "Editors's Page", Down To Earth

Ahmad, K.S.,(1956) "Environment and The Distribution of Population India"

Dubey, R.M.,(1981) "Population dynamic in India with social reference to Uttar Pradesh," Chugh Publication, Allahabad.

Bhattacharjee, A.(1978) "Population Geography in India" New Delhi.